(IJPS) 2018, Vol. No. 6, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

SANSKRIT LITERATURE AND MEDIA

Dr Sita Rathore
Associate Professor, Department of Sanskrit, MMH College, Ghaziabad

संस्कृत साहित्य और मीडिया

डॉ. सीता राठौर
एसो. प्रो., संस्कृत विभाग, एम.एम.एच. कॉलेज, गाजियाबाद

मीडिया का अर्थ अगर आप डिक्शनरी यानि शब्दकोष में खोजेंगे तो आपको इसका मतलब मिलेगा ''माध्यम'' यानि ''साधन''। लेकिन जब आप मीडिया शब्द का इस्तेमाल करते हैं तो यह व्यापक रूप ले लेता है और केवल माध्यम ना रहकर के यह जनसंचार के माध्यमों जैसे किताबों, पत्रिकाओं, समाचारपत्रों, रेडियो कार्यक्रमों, टीवी कार्यक्रमों, फिल्मों, इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न जानकारियों आदि के लिए वास्तव में प्रयुक्त होने वाला शब्द बन जाता है। अब प्रश्न यह उठता है कि ये जनसंचार क्या है? जनसंचार का मतलब जन यानि कि आमजन, जनता, सर्वसाधारण के लिए संचार। इसलिए जनसंचार का मतलब हुआ अपने विचारों, भावों, अभिव्यक्तियों, जानकारियों, सूचनाओं, संवादों, कलाओं, शोधों आदि का विभिन्न माध्यमों के जरिये जन यानि बड़ी तादात में लोगों से कहने, सम्पादित करने, प्रेषित करने, पहुंचाने, भविष्य के लिए संरक्षित करने आदि से है। जनसंचार की आवश्यकता मानव सभ्यता की भलाई के लिए पुरा–पाषाण काल से ही पड़ गई थी, जब हमारे पूर्वजों ने अपने लिए और अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए समस्त संसार की विभिन्न गुफाओं में अपने जीवन और वातावरण से सम्बंधित क्रियाकलापों को चित्रित किया था। उसके बाद भी उसने विभिन्न कालों में कभी चित्रों के माध्यम से, कभी लोक गीतों के माध्यम से, कभी अपने अनूठे नृत्यों के माध्यम से, कभी रंगमंच यानि नाटकों, स्वांगों, खेलों आदि के माध्यम से ना केवल अपनी कला, ज्ञान, अनुभव, अनुभूति आदि को संरक्षित करके हम तक पहुँचाने का अविश्वसनीय सार्थक प्रयास किया गया और आज भी निरंतर जारी है। मनुष्य का आने वाले मनुष्य के लिए किया गया यही जनसंचार जनक बना उस अनूठे इतिहास का जिसे आज हम सभी साहित्य के रूप में जानते हैं। इसलिए सही मायनो में देखा जाये साहित्य की कल्पना जनसंचार के बिना करना अपने आप में एक मूर्खतापूर्ण बात होगी। किसी भी साहित्य को संजोने और उसे सर्वव्यापक बनाने में जनसंचार माध्यम ही मुख्य भूमिका निभाते हैं। ऐसा नहीं है कि केवल जनसंचार माध्यमों से साहित्य का उद्‌गम और साहित्य का विकास ही लाभान्वित हुआ, इसके साथ ये भी एक सत्य है कि साहित्य से जनसंचार के माध्यम भी ना केवल लाभान्वित हुए बल्कि उनके अभी तक के विकास में साहित्य का ही अग्रणी योगदान रहा है। या हम साहित्य और जनसंचार माध्यमों को एक दूसरे का पूरक मान सकते हैं। साहित्य के सभी प्रारूपों पर ना बात करके संगोष्ठी के मुख्य विषय संस्कृत पर ही अपना शोध केंद्रित करने का प्रयास करते हैं और संस्कृत साहित्य और विभिन्न जनसंचार माध्यमों के सम्बन्ध को समझने का प्रयास करते हैं।

(IJPS) 2018, Vol. No. 6, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

संस्कृत जो अपने आपमें न केवल भाषा है बल्कि भारतीय साहित्य को संजोने में इसका योगदान निश्चित रूप से पहले स्थान पर ही है।संस्कृत साहित्य भारतीय मनोरंजन जगत के लिहाज से हमेशा से ही अपार स्रोतों और संभावनाओं से परिपूर्ण है फिर चाहे वो प्रिंट मीडिया हो या फिर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। वेदों के उद्‌गम के साथ ही पहली बार जब उनको भोजपत्रों पर लिखा गया था, उसी पल प्रिंट मीडिया की आवश्यकता और इसका जन्म भी हो गया था, बेशक वो कार्य भोजपत्रों पर उनकी हस्तलिखित प्रति बनाने का रहा हो।

संस्कृत साहित्य ने समय के परिवर्तन के अनुसार जनसंचार माध्यम के हर माध्यम को पूर्ण रूप से प्रभावित किया है–पुस्तक निर्माण के दौर से शुरू हुआ सफर, नाटकों, टेलीविजन, सिनेमा और इंटरनेट तक जारी है। संस्कृत साहित्य में वेदों की रचना के बाद लिखित पुराणों, महाकाव्यों रामायण व महाभारत से होता हुआ, मनुस्मृति, अर्थशास्त्र, प्रसिद्ध कवि कालिदास द्वारा रचित अभिज्ञानशाकुंतलम् से लेकर वर्तमान युग में रचित विभिन्न पुस्तकों और उपन्यासों में अपनी जगह आज भी बनाये हुए है। अभी हाल ही में अमीश त्रिपाठी द्वारा रचित अपार सफलता प्राप्त काल्पनिक उपन्यास ''शिवा–ट्राइलॉजी'', 'रामः इक्ष्वांकु के वंशज', 'सीताः वारियर ऑफ मिथिला' भी संस्कृत साहित्य में मौजूद घटनाओं और किरदारों को अनूठे ढंग से प्रस्तुति मात्र है।

प्राचीन संस्कृत नाटक, अपनी शैलीबद्ध स्वरुप और प्रदर्शन पर महत्व के साथ संगीत, नृत्य और भाव भंगिमा मिलकर ''जीवंत कलात्मक इकाई का निर्माण करते हैं जहाँ नृत्य और स्वांग नाटकीय अनुभव का केंद्र हैं''। संस्कृत साहित्य में मौजूद विभिन्न रसों के समागम और वक्तव्यों को सुशोभित करने के लिए प्रयुक्त हुए छंदों और अलंकारों ने नृत्य और नाटक में जो योगदान संस्कृत संगीत ने दिया उसी के कारण संगीत उद्योग का वर्चस्व आज भी बरकरार है। विश्व इतिहास का सबसे लोकप्रिय मंत्र –

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं।

भर्गो देवस्य धीमहि, धीयो यो नः प्रचोदयात् ।।[1]

यानी गायत्री मंत्र आज भी सबसे ज्यादा सुने जानेवाला संस्कृत मंत्र है। इसी तरह कृष्ण की प्रशंसा में गया गीत–

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरं।

हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरं।।[2]

*जब जनमानस ने सुना तो उसका रोम–रोम ना केवल रोमांचित हुआ बल्कि उसे झूमने के लिए मजबूर भी कर दिया। इनके अलावा **महामृत्युंजय, शिवतांडव–स्रोतम,कर्पूरगौरं करुणावतारं**, इत्यादि कर्णप्रिय और लोक कल्याणकारी मंत्रों को आधार बनाकर भारतीय संगीत उद्योग ने नई ऊंचाइयों को छुआ है।*

(IJPS) 2018, Vol. No. 6, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

संस्कृत महाकाव्यों रामायण और महाभारत *पर निर्मित टीवी सीरीज ने ना केवल भारतीय टेलीविजन जगत को बदल दिया बल्कि विश्व पटल पर भारतीय टेलीविजन जगत के लिए एक अनोखा मंच प्रदान कर दिया। 1987–88 में रामानंद सागर द्वारा निर्मित रामायण का दुनिया के 55 देशों में प्रसारण हुआ और 65 करोड़ लोगों द्वारा देखा गया। इसकी लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि भारतीय टी. वी. के इतिहास में 82 प्रतिशत दर्शक हासिल करने वाला पहला कार्यक्रम बन गया और* ***बी.बी.सी*** *द्वारा जब यह कहा गया कि प्रत्येक रविवार की सुबह को* ^^streets would be deserted, shops would be closed and the people would be bathe and garland their T.V sets before the serial began.''

इसके बाद बी. आर. चोपडा निर्देशित महाभारत का प्रसारण जब षुरु हुआ जो टेलीविजन सेट्स की बिक्री में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की गई और टेलीविजन सेट्स निर्माण में नई–नई कम्पनियों का आगमन हुआ और टेलीविजन सेट्स की कीमतो में भारी गिरावट दर्ज की गई, जिससे सामान्य–जन के घर–घर में टेलीविजन देखा जाने लगा। महाभारत प्रसारण के प्रारंभ में उच्चरित श्रीमद्भगवदगीता का इस ष्लोक–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥[3]

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥[4]

की ध्वनि के साथ लोग अपना सारा काम छोडकर टेलीविजन सेट्स पर चिपक जाते।

महाकाव्य रामायण और महाभारत *ने भारतीय कथानक को दो महानायक श्री राम और कृष्ण के रूप में दे दिए। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण में श्री राम के अलावा हनुमान, सीता और लव –कुश जहां खुद को स्थापित करने वाले नायक और कालजयी रावण के रूप में एक बहुत ही वृहद, विस्तृत और अविस्मरणीय खलनायक रावण भी भारतीय सिनेमा को दिया। यही वह कारण है कि भारतीय सिनेमा के कथानक पर यह किरदार हमेशा से अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। जब भी बुराई पर अच्छाई की जीत, सत्य का असत्य पर प्रबल होना, शोषण –उत्पीड़न का विरोध आदि जब भी फिल्म में दिखाया जाता है तो रामायण के किरदार कथानक की कहानी,पीछे की कहानी और कहानी के अन्दर की कहानी के रूप में अक्सर अस्तित्व में आ जाते हैं। रावण रामायण का एक ऐसा सशक्त किरदार है जिसको लेकर अनेक फिल्मकारों ने बिना राम के ही बहुत सारी फिल्मों का निर्माण कर दिया। रामायण में ना केवल भारतीय जनमानस में अपनी गहरी पैट बना रखी है बल्कि उसके मानस पर अमिट छाप छोड़ रखी है। यही वह कारण है कि अब तक 100 से भी ज्यादा फिल्मों व सीरियलस् का निर्माण अलग –अलग माध्यमों से अलग–अलग भाषाओं में हो चुका है। संस्कृत साहित्य का टी. वी. सीरियलस् में योगदान–**विघ्नहर्ता गणेश, कर्मफलदाता शनि, महाकाली** *जैसे धारावाहिकों में आज*

भी जारी है। इनके महत्व को इस प्रकार समझा जा सकता है कि इन सभी का प्रसारण प्राइम टाईम में किया जाता है।

संस्कृत नाटक नाट्य के नाम से भी जाने जाते हैं। नाट्य शब्द की उत्पत्ति ''नृत्'' (गात्रविक्षेप) धातु से हुई है। जिससे संस्कृत नाटक के भव्य नृत्य नाटक चरित्र का पता चलता है। जिस परंपरा का पालन आज भी हिंदी सिनेमा में हो रहा है । अभिनय की रास– विधि, जिसकी उत्पत्ति प्राचीनसंस्कृत नाटक के काल में हुई थी, यहीं एक मूल गुण है जो भारतीय सिनेमा को पश्चिमी सिनेमा से भिन्न करता है।

*कालिदास संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे। उन्होंने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएं की और उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्व निरूपित हैं। कालिदास अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण राष्ट्र की समग्र राष्ट्रीय चेतना को स्वर देने वाले कवि माने जाते हैं। **अभिज्ञानशाकुंतलम्** कालिदास की सबसे प्रसिद्ध रचना है। यह नाटक कुछ उन भारतीय साहित्यिक कृतियों में से है जिनका सबसे पहले यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ था। यह पूरे विश्व साहित्य में अग्रगण्य रचना मानी जाती है। **मेघदूतम्** कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसमें कवि की कल्पनाशक्ति और **अभिव्यंजनावादभावाभिव्यंजनाशक्ति** अपने सर्वोत्कृष्ट स्तर पर है और प्रकृति के मानवीकरण का अद्भुत दृश्य इस खंडकाव्य में दिखता है। संगीत का अच्छा प्रादुर्भाव इस खंडकाव्य में दिखाई देता है, केवल मात्र मन्दाक्रान्ता छन्द ही पूरे खंडकाव्य की षोभा बढ़ाता है। कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं और तदनुरूप वे अपनी अलंकार युक्त किन्तु सरल और मधुर भाषा के लिये विशेष रूप से जाने जाते हैं। उनके प्रकृति वर्णन अद्वितीय हैं और विशेष रूप से अपनी उपमाओं के लिये जाने जाते हैं। साहित्य में औदार्य गुण के प्रति कालिदास का विशेष प्रेम है और उन्होंने अपने श्रृंगार रस प्रधान साहित्य में भी आदर्शवादी परंपरा और नैतिक मूल्यों का समुचित ध्यान रखा है। इसी तरह संस्कृत साहित्य को आधार बनाकर देश भर के विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न प्रकार के नाटक का मंचन होता रहा है और आगे भी होता रहेगा। अगर बात भारतीय सिनेमा की कि जाए तो उसके अस्तित्व में आने का कारण भी संस्कृत साहित्य की अपार समृद्धता ही है। पहली भारतीय फिल्म होने का गौरव दादा साहेब फाल्के द्वारा 1913 में संस्कृत साहित्य को आधार बनाकर बनाई गई **फिल्म राजा हरिश्चंद्र** को जाता है। इस फिल्म व इसके निर्देशक से जुडी कुछ रोचक बाते इस प्रकार है–*

***बॉलीवुड का जन्म :** 1910 में मुंबई में फिल्म **द लाइफ ऑफ क्राइस्ट** के प्रर्दशन के दौरान दर्शकों की भीड़ में एक ऐसा शख्स भी था जिसे फिल्म देखने के बाद अपने जीवन का लक्ष्य मिल गया। लगभग दो महीने के अंदर उसने शहर में प्रदर्शित सारी फिल्में देख डाली और निश्चय कर लिया वह फिल्म निर्माण ही करेगा। यह शख्स और कोई नहीं भारतीय सिनेमा के जनक दादासाहब फाल्के थे।*

***बावर्ची बनी बॉलीवुड की पहली हीरोइन:** भारतीय सिनेमा जगत की पहली फीचर फिल्म **राजा हरिश्चंद्र** का निर्माण दादा साहब फाल्के (मूल नाम धुंडिराज गोविन्द फाल्के) ने फाल्के फिल्म कंपनी के बैनर तले किया। फिल्म बनाने में उनकी मदद फोटोग्राफी उपकरण के डीलर यशवंत नाडरकर्णी ने की थी। फिल्म में राजा हरिशचंद्र का किरदार दत्तात्रय दामोदर, पुत्र रोहित का किरदार दादा फाल्के के*

पुत्र भालचंद्र फाल्के जबकि रानी तारामती का किरदार रेस्टोरेंट में बावर्ची के रूप में काम करने वाले व्यक्ति अन्ना सालुंके निभाया था। ***500 लोगों ने किया काम, 15000 रुपए में बनी फिल्म:****फिल्म के निर्माण के दौरान दादा फाल्के की पत्नी ने उनकी काफी सहायता की। इस दौरान वह फिल्म में काम करने वाले लगभग 500 लोगों के लिये खुद खाना बनाती थीं और उनके कपड़े धोती थीं। फिल्म के निर्माण में लगभग 15000 रूपये लगे जो उन दिनो काफी बड़ी रकम हुआ करती थी। फिल्म का प्रीमियर ओलंपिया थियेटर में 21 अप्रैल 1913 को हुआ जबकि यह फिल्म तीन मई 1913 में मुंबई के कोरनेशन सिनेमा में प्रर्दशित की गयी। लगभग 40 मिनट की इस फिल्म को दर्शकों का अपार समर्थम मिला। फिल्म टिकट खिड़की पर सुपरहिट साबित हुयी।*

भारत की पहली महिला अभिनेत्री और पहला डांस नंबर:*फिल्म* ***राजा हरिश्चंद्र*** *की अपार सफलता के बाद दादा साहब फाल्के ने वर्ष 1913 में* ***मोहिनी भस्मासुर*** *का निर्माण किया। इसी फिल्म के जरिये कमला गोखले और उनकी मां दुर्गा गोखले जैसी अभिनेत्रियों को भारतीय फिल्म जगत की पहली महिला अभिनेत्री बनने का गौरव प्राप्त हुआ था। इसी फिल्म में पहला डांस नंबर भी फिल्माया गया था। कमला गोखले पर फिल्माए इस गीत को दादा फाल्के ने नृत्य निर्देशित किया था।* ***हिट हुआ फाल्के का आइडिया, खुलने लगीं फिल्म कंपनियां:*** *वर्ष 1914 में दादा फाल्के ने* ***राजा हरिश्रचंद्र, मोहिनी भस्मासुर और सत्यवान सावित्री*** *को लंदन में प्रर्दशित किया। इसी वर्ष आर.वैकैया और आर. एस प्रकाश ने मद्रास में पहले स्थायी सिनेमा हॉल गैटी का निर्माण किया। वर्ष 1917 में बाबू राव पेंटर ने कोल्हापुर में महाराष्ट्र फिल्म कंपनी की स्थापना की वही जमशेदजी फरामजी मदन (जे.एफ मदन) ने एलफिंस्टन बाईस्कोप के बैनर तले कोलकाता में पहली फीचर फिल्म* ***सत्यवादी राजा हरिश्रचंद्र*** *का निर्माण किया।*

बॉलीवुड का पहला डबल रोल, पहली सुपरहिट फिल्म: *वर्ष 1917 में प्रदर्शित दादा फाल्के की फिल्म लंका दहन वैसी पहली फिल्म थी जिसमें किसी कलाकार ने दोहरी भूमिका निभाई थी। अन्ना सांलुके ने इस फिल्म में राम और सीता का किरदार निभाया था। इस फिल्म को भारतीय सिनेमा को पहली सुपरहिट फिल्म बनने का गौरव प्राप्त है। बंबई के एक सिनेमा हॉल में यह फिल्म 23 सप्ताह तक लगातार दिखाई गयी थी।*

जब फिल्मी पर्दा बन गया मंदिर: *वर्ष 1919 में प्रदर्शित दादा फाल्के की फिल्म* ***कालिया मर्दन*** *महत्वपूर्ण फिल्म मानी जाती है। इस फिल्म में दादा फाल्के की पुत्री मंदाकिनी फाल्के ने कृष्णा का किरदार निभाया था।* ***लंका दहन और कालिया मर्दन*** *के प्रर्दशन के दौरान श्रीराम और श्री कृष्ण जब पर्दे पर अवतरित होते थे तो सारे दर्शक उन्हे दंडवत प्रणाम करने लगते। इसी फिल्म की अपार सफलता ने दादा साहेब फाल्के और अन्य फिल्मकारों को संस्कृत साहित्य पर आधारित* ***कालिदास, कीचका वधम्, सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र, मोहिनी –भस्मासुर, लंका दहन, रामा पादुका पत्ताभिषेकम्*** *आदि ना जाने कितनी फिल्में भारतीय सिनेमा जगत को दी। बेशक तकनीकी रूप से भारतीय सिनेमा कितना भी समृद्ध हो गया हो पर आज भी कथानक पर इसका संस्कृत साहित्य पर मोह छूटता ही नहीं है, और शायद यही कारण है कि भारतीय फिल्म इतिहास की सबसे ज्यादा कमाई का रिकॉर्ड बनाने वाली फिल्म* ***बाहुबली व बाहुबली–2*** *के संवादों, युद्ध कौशलों, संगीत में संस्कृत साहित्य का भरपूर उपयोग किया गया। इसकी लोकप्रियता और कमाई का आंकलन करते हुए अब अन्य फिल्मकारों ने फिर से*

(IJPS) 2018, Vol. No. 6, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्य पर मेगा–बजट, मल्टीस्टारर फिल्म बनाने की घोषणा भी हाल ही में की है। संस्कृत साहित्य का प्रिंट व इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में वेदों के सृजन के साथ षुरु हुआ सफर आज भी विभिन्न इन्टरनेट माध्यम, यू–टयूब, मोबाईल एप, गेम्स आदि में कायम है और आगे भी जारी रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. *ऋग्वेद*
2. *मधुराश्टकम्*
3. *श्रीमद्भगवदगीता द्वितीयाध्याय*
4. *श्रीमद्भगवदगीता द्वितीयाध्याय*
5. *संस्कृत साहित्य का इतिहास*

REFERENCES

1. Rigveda
2. Madhurashtkam
3. Shrimadbhagwadgeeta 2nd Chapter
4. Shrimadbhagwadgeeta 2nd Chapter
5. Sanskrit Sahitya ka Itihaas